व्याकरण - नाटक (अभिज्ञान शाकुन्तल)

नायिका शकुन्तला का चरित्र चित्रण :-

शकुन्तला कालिदास के रूपकों की सर्वोत्कृष्ट नायिका है। शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र और मेनका अप्सरा के संयोग से उत्पन्न हुई एवं ऋषि कण्व द्वारा पालित कन्या है, उसका पालन-पोषण प्रकृति की गोद में होने के कारण वह निसर्ग कन्या बन गई है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ नाटक अभिव्यक्त हुई है -

अनुपम सौन्दर्य :-

शाकुन्तल के प्रथम अंक में हमें शकुन्तला अपनी सखियों के साथ वृक्ष-सेचन करती हुई दिखाई देती है। वह सोलह सत्रह वर्षीय अनुपम सुन्दरी है। उसका वर्णन नायक दुष्यन्त के मुख से प्रथम अंक में कवि ने इस प्रकार कराया है -

मानुसिषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः ।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात् ॥

राजा उसके सौन्दर्य को देखकर अवाक् हो जाता है। वह उसे देखकर महान् आश्चर्य के साथ कहता है - 'मानव लोकोत्पन्न स्त्री जाति से भला इस शकुन्तला जैसे रूप की उत्पत्ति कैसे हो सकती है? ठीक उसी प्रकार जैसे अपनी

IND CamScanner App

Page 02

प्रभा से देदीप्यमान तेज विद्युत् प्रकाश अथवा चन्द्रादि का तेज पृथ्वी तल से उत्पन्न नहीं होता। दुष्यन्त शकुन्तला के कौमार्य, सौन्दर्य अथवा लावण्य पर मुग्ध होकर उसे "अनाघ्रात पुष्प, अलून किसलय, अनाविद्ध रत्न, अनास्वादित मधु तथा अखण्ड पुण्यों का फल" कहता है (2.10)। उसके कोमल शरीर पर वल्कल वस्त्र भी शोभा बढ़ाने वाला है। राजा दुष्यन्त का यह कथन शकुन्तला के माधुर्य का व्यंजक है-

"इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥"

दुष्यन्त उसके रूप पर मुग्ध है। वह निश्चिन्त होकर वृक्षों की ओट से आँखे भरके देखना चाहता है। वह उसे विधाता की अनुपम सृष्टि प्रतीत होती है।-

"स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे।
धातुर्विभुत्वमनुचिन्त्य वपुश्च तस्याः ॥"

मुग्धा नायिका :-

शास्त्रीय दृष्टि से शकुन्तला मुग्धा नायिका है। राजा दुष्यन्त का इसके प्रति कथन है- "मुग्धासु तपस्विकन्यासु" तपोवन में पालन होने के कारण वह सुशीला, लज्जाशीला एवं सरलहृदया कन्या है। वह लोकव्यवहार से सर्वथा अनभिज्ञ तथा शीघ्र विश्वास कर लेने वाली नायिका है। राजा दुष्यन्त को देखते ही

IND CamScanner App

उसके मन में अनुभूत प्रेमविकार उत्पन्न हो जाता है, जिसे वह तपोवन के आचरण के विरुद्ध समझती है। परन्तु अपने इस भाव को लज्जावश वह अपनी अन्तरंग सखियों से भी नहीं व्यक्त करती। सखियों द्वारा बार-बार अनुरोध करने पर भी वह अपने मनोभावों को व्यक्त करने का साहस नहीं कर पाती है- "सखि! तपोवन के रक्षक वह राजर्षि जब से मेरी दृष्टि के विषय बने...।" बस इतना आधा कहकर लज्जा के मारे चुप हो जाती है।

गुरुजनों के प्रति सम्मान भाव :-

शकुन्तला अपने पूज्य गुरुजनों के प्रति अत्यधिक आदरभाव रखती है। तपोवन से विदाई लेते समय वह अपने पिता कण्व के चरणों में गिर पड़ती है। सप्तम अंक में दुष्यन्त के साथ मारीच ऋषि एवं अदिति के समक्ष जाने में लजाती है।

निसर्ग कन्या :-

शकुन्तला को प्रकृति के प्रति इतना सहज और प्रगाढ़ स्नेह है कि परवर्ती आलोचकों ने उसे 'निसर्ग कन्या' ही कह दिया है। उसका जन्म एवं लालन-पालन प्रकृति की गोद में हुआ है अतः उसका लता-वृक्ष आदि के प्रति सोदर की भाँति प्रेम उत्पन्न हो गया है। तपोवन के तरुओं प्रति उसके स्नेह की पराकाष्ठा कण्व ऋषि के इस कथन से

IND CamScanner App

ही स्पष्ट हो जाती है कि वह पहले उनको जल पिलाकर जल पीती थी - 'पातुं प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या'

आदर्श सखी :-

शकुन्तला सखी के रूप में आदर्श है। अपने सखियों के परिहास करने पर वह बुरा नहीं मानती। वह अनसूया एवं प्रियम्वदा से कोई बात छिपती नहीं ~~नहीं~~ है उनसे परामर्श करके ही प्रत्येक कार्य करती है। परिणय सम्बन्ध के लिए बहुत आग्रह करने पर उसने दुष्यन्त से कहा कि सखियों से मुझे पूछ लेने दीजिए। तपोवन से विदा होते समय जब सखियाँ उसके मंगल शृंगार का प्रस्ताव करती हैं, तब वह यह कहकर रोने लगती है - "इदमपि बहु मन्तव्यम। दुर्लभ मिदानीं मे सखी मण्डनं भविष्यति।" जब सबसे विदाई लेकर शकुन्तला चली जाती है तब सखियाँ बेहाल हो जाती हैं उसके अभाव में आश्रम उन्हें शून्य-सा प्रतीत होता है।

आदर्श पुत्री

शकुन्तला न केवल आदर्श सखी हैं, अपितु आदर्श पुत्री भी है। पिता कण्व ने उसे आश्रम में अतिथि सत्कार के लिए नियुक्त किया है। अपने इस उत्तरदायित्व का वह पूर्ण निष्ठा के साथ पालन करती है। अतः हार्दिक कामवेदना के बावजूद वह पिता की आज्ञा के बिना दुष्यन्त से परिणय के लिए तैयार नहीं होती। विदाई

IND CamScanner App

लेते समय भी वह अत्यधिक दुःख का अनुभव करती है।

पतिव्रता पत्नी :-

शकुन्तला प्रथम श्रेणी की पतिव्रता पत्नी है। दुष्यन्त का वियोग उसके लिए असह्य है। राजा के हस्तिनापुर चले जाने पर वह अपनी भी सुध-बुध खो बैठी है। दुर्वासा के शाप का उसे किंचित् भी पता नहीं है। हस्तिनापुर में निर्ममता के साथ दुष्यन्त उसका तिरस्कार करता है, परित्याग करता है परन्तु शकुन्तला उससे विमुख नहीं होती। वह दुष्यन्त को दोष न देकर अपने भाग्य को ही कोसती है। दोषी ठहराती है- 'नूनं मे सुखप्रतिबन्धकम्' मारीच के आश्रम में वह तपस्विनी के वेश में रहती है। प्रसाधन क्या होता है, इसे उसने इस आश्रम में जाना ही नहीं है वह तपस्विनी की भाँति अपने चारित्र्य की रक्षा में संलग्न है-

वसने परिधूसरे वसाना नियमक्षाममुखी धृतैकवेणिः।
अतिनिष्करुणस्य शुद्धशीला मम दीर्घविरहव्रतं बिभर्ति॥

उसकी इस तपस्या का परिणाम है कि उसका पति उससे मिलता है। पैरों पड़ता है, मनाता है, तथा अन्त में अनुपम सुख भोग के लिए उसे सादर अपनी राजधानी में ले जाता है।

डॉ० ओम प्रकाश शर्मा
महाराजा कॉलेज, आरा

IND CamScanner App